

साँस—साँस में बाँस

एलेक्स एम. जॉर्ज



मुख्य बिंदु

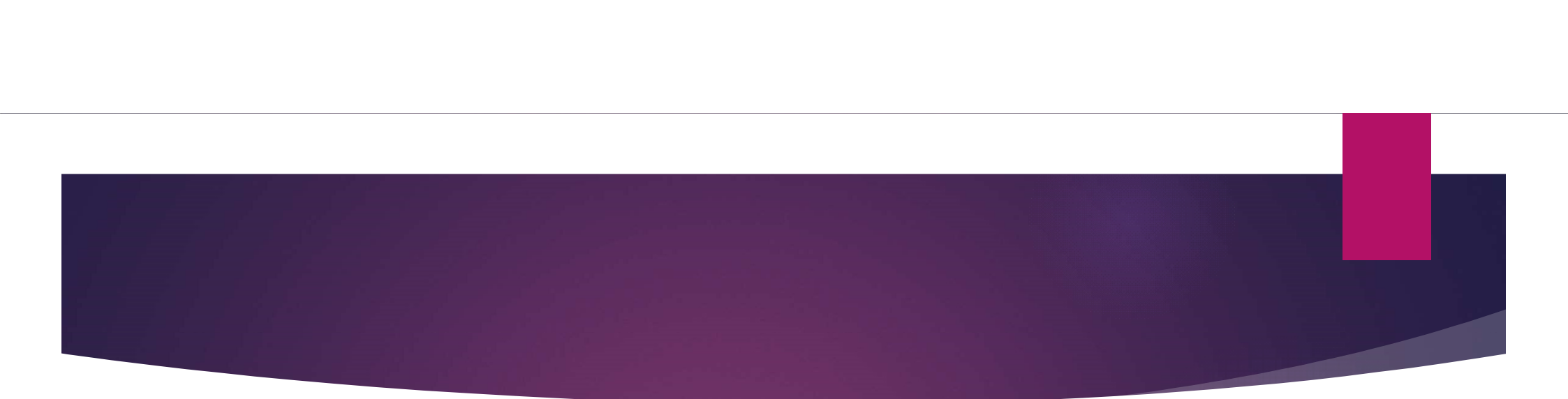
भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के सातों राज्यों में बाँस बहुतायत में होता है।

बाँस से बुनाई का रिश्ता उस समय से है, जब इंसान भोजन इकट्ठा करता था।

जुलाई से अक्टूबर के महीने में बाँस काटे जाते हैं।

एक से तीन वर्ष के बाँस ही उपयोगी होते हैं।

तीन वर्ष से ज्यादा के बाँस सख्त होते हैं, जो आसानी से टूट जाते हैं।



बाँस में रंगाई के लिए गुड़हल, इमली के पत्तों और आम की गुठली का प्रयोग किया जाता है।

बाँस को काटने के लिए 'दाओ' नामक औजार का इस्तेमाल होता है।

बाँस से हमारे जीवनकाल की समस्त चीज़ों का निर्माण होत है।

जैसे— बरतन, औजार, टोकरी, चारपाई, फ़र्नीचर, सजावटी सामान, चटाई, टोपी , ईंधन के लिए, खाने में अचार, बाँस का कोयला, यहाँ तक अर्थी भी बाँस से बनती है।

पाठ का सार

‘साँस—साँस में बाँस’ पाठ में बहुत समय पहले एक जादूगर चंगकीचंगलनबा था। वह अपने जादू के लिए मशहूर था। अपनी मृत्यु के समय लोगों को उसने कहा उसकी कब्र को 6वें दिन खोदें। उस कब्र से बाँस के डिज़ाइन मिले और लोगों ने खूब नकल की। भारत के कई राज्यों में बाँस की पैदावार है जिसमें उत्तर—पूर्वी क्षेत्र के सातों राज्यों में बाँस बहुतायत में मिलता है। जुलाई से अक्टूबर के महीनों में लोग बाँस इकट्ठा करते हैं। 1—3वर्ष के बाँस मजबूत होते हैं बूढ़े बाँस सख्त होकर टूट जाते हैं। बाँस को जिससे काटते हैं उसे दाओ कहते हैं। बाँस कई तरह से उपयोग में आता है।